IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

" मध्यप्रदेश का व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप "

डॉ. आरती कमेड़िया
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)
भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय **महू**, जिला **इंदौर** (म0प्र0)

सारांश :– आर्थिक दृष्टिकोण से जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना अति महत्वपूर्ण होती है। व्यावसायिक संरचना से किसी क्षेत्र की उन्नति, जीविकोपार्जन , संसाधन निर्भरता एवं रोजगार के स्तर को ऑका जा सकता है। व्यावसायिक संरचना विभिन्न कारको जैसे– भौतिक स्थिति, अर्थव्यवस्था की संरचना, शिक्षा, प्रौद्योगिकी, आय की स्तर आदि से प्रभावित होती है। व्यावसायिक संरचना को प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों के रूप में देखा जा सकता है। व्यावसायिक संरचना विभिन्न गतिविधियो के आधार पर देखी जाती है। मध्यप्रदेश राज्य की मुख्य कार्यशील जनसंख्या 31.26%, सीमांत कार्यशील 12.21% तथा गैर कार्यशील जनसंख्या 56.23% है। मध्यप्रदेश में कृषकों की मात्रा सर्वाधिक 36.18% कार्यशील जनसंख्या के रूप में है। वहीं सीमांत कार्यशील में 3 से 6 महीने कार्य करने वाले व्यक्ति सबसे अधिक 82.39% है। गैर कार्यशील में विद्यार्थियों का प्रतिशत (46.37%) ज्यादा है। गैर कार्यशील जनसंख्या में महिलाओं का हिस्सा अधिक है। राज्य की आर्थिक वृद्धि संभवतः व्यावसायिक ढाँचे में बदलाव के साथ ही तेज होगी । इस हेतु संतुलित कार्यबल, लिंगानुसार तथा समयानुसार कार्य का वितरण एवं प्रभावशील कारकों का संतुलित होना आवश्यक है।

मुख्य बिन्दु :–व्यावसायिक संरचना, कारक, कार्यात्मक क्षेत्र, कार्यिक गतिविधियाँ, संतुलित वितरण ।

किसी क्षेत्र में कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या के विभिन्न कार्यो में संलग्नता उस क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना कहलाती है। यह उस क्षेत्र या स्थान की वह सक्रिय जनसंख्या होती है जो उस क्षेत्र के लिए कार्य करती है तथा विभिन्न व्यवसायों में संलग्न रहती है । इसे कार्यशील जनसंख्या के रूप में भी अभिव्यक्त किया जाता है। कार्यशील जनसंख्या उस क्षेत्र में विभिन्न कार्य करती है तथा उस क्षेत्र का कार्यात्मक स्तर निर्धारित करती है। आर्थिक दृष्टिकोण से जनसंख्या की कार्यात्मक संरचना अति महत्वपूर्ण होती है क्योंकि इसके द्वारा किसी क्षेत्र की प्रगति, जीविकोपार्जन, संसाधन निर्भरता एवं बेरोजगारी का स्तर का आंकलन संभव है।

किसी क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना उस क्षेत्र की जनसंख्या के भौगोलिक परिवेश एवं अन्य कार्यो पर भी निर्भर करती है क्योंकि यदि क्षेत्र ग्रामीण है तो वहाँ की व्यावसायिक संरचना कृषि या इससे संबंधित कार्यो के इर्द–गिर्द ही घुमती है । वहीं क्षेत्र नगरीय होने की स्थिति में व्यावसायिक सरंचना सेवा क्षेत्र, औद्योगिक इकाईया एवं नवीन व्यवसाय केंद्रो को दर्शाती है। अतः कहा जा सकता है कि व्यावसायिक संरचना को विभिन्न कारक

जैसे –

- भौतिक स्थिति
- अर्थव्यवस्था की संरचना
- जनसंख्या
- शिक्षा
- व्यवसाय का आकार एवं प्रकृति
- रोजगार की उपलब्धता
- आय का स्तर
- प्रौद्योगिकी
- राजनीतिक गतिविधियाँ
- जाति संरचना
- सरकारी नीतियाँ आदि ।

व्यावसायिक संरचना किसी क्षेत्र की कार्यशील आबादी को तीन प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित करती है। जैसे–जैसे अर्थव्यवस्था का स्तर विकसित होता जाता है व्यावसायिक स्तर भी प्राथमिक से द्वितीयक और तृतीयक में स्थानांतरित होता जाता है। व्यावसायिक संरचना के निम्न तीन क्षेत्र है–

1. प्राथमिक क्षेत्र – प्राथमिक क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े कार्य सम्मिलित है जैसे – कृषि, वानिकी, मछली पकड़ना, खनन एवं इसी से संबंधित अन्य गतिविधियाँ ।

2. द्वितीयक क्षेत्र – द्वितीयक क्षेत्र में विनिर्माण एवं औद्योगिक कार्य शामिल है जैसे – इस्पात उत्पादन, ऑटोमोबाईल विनिर्माण तथा विभिन्न निर्माण से संबंधित अन्य उद्योग।

3. तृतीयक क्षेत्र – तृतीयक क्षेत्र में सेवा क्षेत्र को शामिल किया जाता है । इस क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा, बैंकिग, शिक्षा, राजस्व, पुलिस, आई टी एवं अन्य प्रायवेट एवं सरकारी नौकरियाँ सम्मिलित है।

इसके अतिरिक्त चतुर्थ एवं पंचम क्षेत्र भी है जिसमें उच्च स्तरीय व्यवसाय जैसे– शोध, विचार, विशेषज्ञ नीति निर्धारक आदि कार्य शामिल है। व्यावसायिक सरंचना के अन्तर्गत मुख्य कार्यशील, सीमांत कार्यशील एवं गैर कार्यशील जनसंख्या को रखा जाता है। कार्यशील जनसंख्या जो कि विभिन्न कार्यो में संलग्न है उन्ही के अन्तर्गत मुख्य एवं सीमांत श्रमिकों को रखा जाता है । वही गैर श्रमिक वह है जो कार्यिक गतिविधियें में भाग नही लेते है। इन्हीं निम्न प्रकार से समझा जा सकता है –

1. मुख्य श्रमिक – वे लोग जिन्होने संदर्भ अवधि अर्थात छः महीने या उससे अधिक समय के दौरान विभिन्न कार्य किए है।
2. सीमांत श्रमिक – वे लोग जिन्होने संदर्भ अवधि अर्थात छः महीने से कम समय के दौरान काम नहीं किया है।
3. गैर श्रमिक – वे लोग जिन्होने संदर्भ अवधि के दौरान बिल्कुल भी कार्य नही किया है।

मध्यप्रदेश राज्य की कुल जनसंख्या 72626809 है जो कि देश की कुल जनसंख्या का 5.99% हिस्सा है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में मुख्य कार्यशील 31.26%, सीमांत कार्यशील 12.21% तथा सर्वाधिक अकार्यशील 56.53% है।

तालिका क्रमांक – 1

मध्यप्रदेश की व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप (वर्ष 2011)

व्यावसायिक संरचना	कुल व्यक्ति	पुरूष	महिला
मुख्य कार्यशील	22702119	16362065	6340054
सीमांत कार्यशील	8872014	3784905	5087109
गैर कार्यशील	41052676	17465336	23587340
कुल जनसंख्या	72626809	37612306	35014503

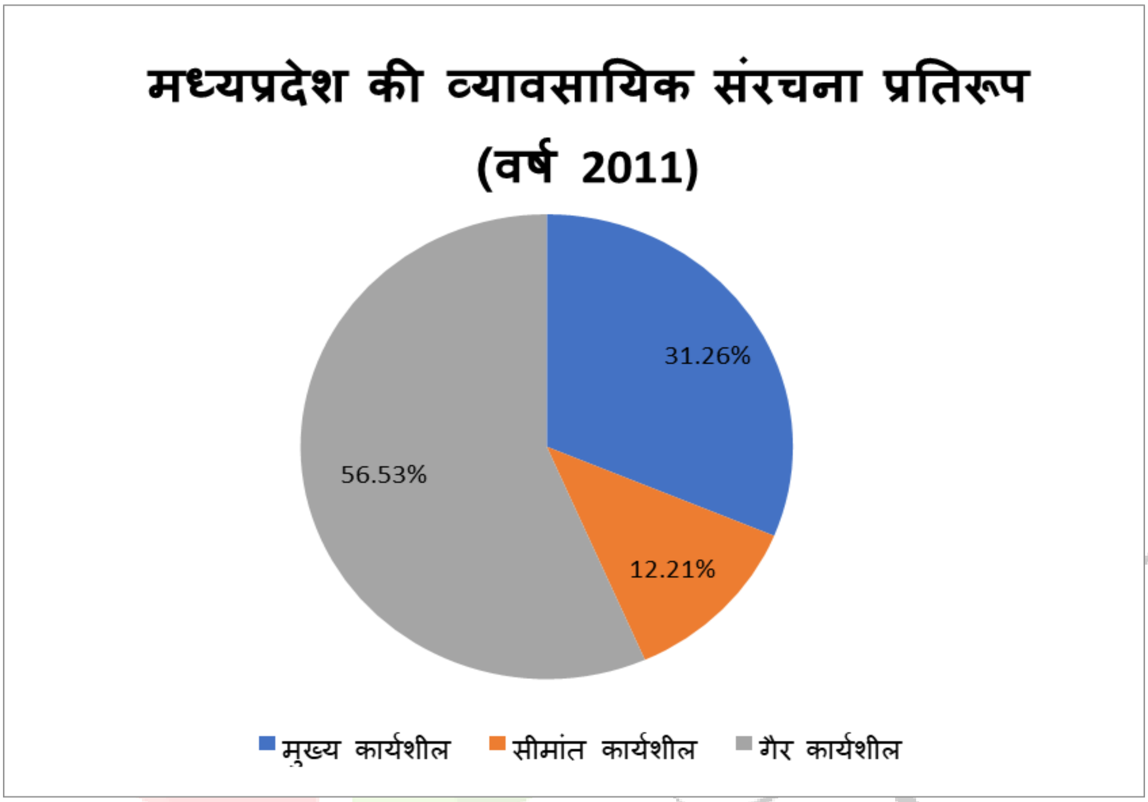

तालिका क्रमांक – 2

मध्यप्रदेश में मुख्य कार्यशील जनसंख्या (वर्ष 2011)

मुख्य कार्यशील जनसंख्या	कुल व्यक्ति	पुरूष	महिला
कृषक	8214993	6038749	2176244
खेतिहर मजदूर	6630821	4027711	2603110
वृक्षारोपण, मवेशी, वानिकी, शिकार एवं संबंधित गतिविधियाँ	237663	179009	58654
खनन तथा उत्खनन	135810	119510	16300
अन्य कार्य	7482832	5997086	1485746
कुल जनसंख्या	22702119	16362065	6340054

तलिका क्रमांक –2 से स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश राज्य में मुख्य कार्यशील जनसंख्या में कृषकों (36.18%) का प्रतिशत सर्वाधिक है। तत्पश्चात अन्य कार्य, खेतिहर मजदूर, वृक्षारोपण, मवेशी, वानिकी एवं संबंधित गतिविधियाँ तथा सबसे न्यूनतम खनन तथा उत्खनन का कार्य होता है

जिनका प्रतिशत क्रमशः 32.97%, 29.21%, 1.04% तथा 0.60% है। मुख्य कार्यशील व्यक्ति अन्य कार्य के अन्तर्गत निर्माण, बिजली, जल आपूर्ति, थोक एंव खुदरा व्यापार, परिवहन तथा भंडारण, सूचना तथा संचार, रियल स्टेट, वित्तीय तथा बीमा, प्रशासनिक गतिविधियाँ ,रक्षा, कला, मनोरंजन आदि कार्य करते है।

तालिका क्रमांक – 3
मध्यप्रदेश में सीमांत कार्यशील जनसंख्या (वर्ष 2011)

सीमांत कार्यशील जनसंख्या	कुल व्यक्ति	पुरूष	महिला
3 महीने से कम अवधि में कार्य	1562488	638323	924165
3 से 6 महीने की अवधि में कार्य	7309526	3146582	4162944
कुल जनसंख्या	8872014	3784905	5087109

मध्यप्रदेश में सीमांत कार्यशील जनसंख्या में 3 महीने से कम अवधि में 17.61% व्यक्ति कार्य करते है। वहीं 82.39% व्यक्ति 3 से 6 महीने की अवधि में कार्य करते है। सीमांत कार्यशील जनसंख्या में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 4454051 व्यक्ति कार्य की तलाश या कार्य हेतु उपलब्ध भी है।

तालिका क्रमांक – 4
मध्यप्रदेश में गैर कार्यशील जनसंख्या (वर्ष 2011)

गैर कार्यशील जनसंख्या	कुल व्यक्ति	पुरूष	महिला
विद्यार्थी	19038123	10157635	8880488
घर के कार्य	7586094	288269	7297825
आश्रित	12107967	5874336	6233631
पेंशनर	698362	371655	326707
किरायेदार	23499	11726	11773
भिखारी आदि	25603	15542	10061
अन्य	1573028	746173	826855
कुल जनसंख्या	41052676	17465336	23587340

मध्यप्रदेश राज्य की अकार्यषील जनसंख्या में सर्वाधिक जनसंख्या विद्यार्थियों की है जिसका हिस्सा 46.37% है। तत्पश्चात आश्रित, घर के कार्य, अन्य कार्य, पेंशनर, भिखारी आदि तथा सबसे कम किरायेदारों का हिस्सा आता है जो क्रमशः 29.49%, 18.48%, 3.84%, 1.70%, 0.06% तथा 0.06% है। अकार्यशील जनसंख्या में सर्वाधिक मात्रा में महिलाओं की संख्या अधिक है जिसका प्रतिषत 57.46% है। विद्यार्थियों , पेंशनर तथा भिखारियों आदि में महिलाओं की मात्रा पुरूषों से कम है अर्थात यहाँ महिलाएँ कम गैर कार्यशील है। वहीं घर के कार्य , आश्रित, किरायेदार एवं अन्य कार्य आदि में महिलाओं की मात्रा पुरूषों की तुलना में अधिक है।

कुल गैर कार्यशील जनसंख्या में 2350175 व्यक्ति कार्य की तलाश या कार्य हेतु उपलब्ध है। इसमें भी महिलाओं की मात्रा 54.71% पुरूषो की तुलना में अधिक है।

उपरोक्त मध्यप्रदेश राज्य की व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप से स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश में कार्य करने वाले व्यक्तियों की संख्या कम है जब कि अकार्यशील व्यक्तिओं की मात्रा अधिक है। वहीं पुरूषों की तुलना में महिलाएँ कम कार्य करती है तथा गैर कार्यशील महिलाएँ अधिक है।

राज्य की आर्थिक वृद्धि संभवतः व्यावसायिक ढाँचे में बदलाव के साथ ही तेज होगी । इस हेतु संतुलित कार्यबल तथा कार्य का वितरण स्थनिक रूप से समान होना चाहिए । किसी देश या राज्य की आर्थिक उन्नति हेतु व्यावसायिक संरचना उन्नत तथा संतुलित होना आवश्यक है। लिंगानुसार तथा समयानुसार भी कार्य का वितरण समान होना चाहिए । साथ ही प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र तथा तृतीयक क्षेत्र में भी असमानता आर्थिक ढाँचे को क्षति पँहुचाती है तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक उन्नति में बाधक होती है।

अतः व्यावसायिक ढाँचें को सुदृढ़ करना आवश्यक है तथा प्रभावित कारकों को समायोजित कर मार्ग प्रशस्त करना यथोचित होगा ।

सन्दर्भ सूची :–

- चौधरी, विरेन्द्र (2018) : उत्तरप्रदेश में व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप, IJCRT, Volume 6, Issue 2, April 2018, Pp. 28-38.
- गौतम, अलका (2022) : आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज ।
- **http://www.censusindia.gov.in**
- मौर्य, एस.डी. (2022) : आर्थिक भूगोल, प्रवालिका पब्लिंकेशन्स प्रयागराज ।
- शर्मा, कमल (2015) : मध्यप्रदेश का भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल ।